



REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X

IMPACT FACTOR : 5.7631 (UIF)

VOLUME - 13 | ISSUE - 2 | NOVEMBER - 2023



सतना जिले के ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों के महाविद्यालयों में अध्ययन की गतिविधियों में संलग्न छात्र-छात्राओं में खेल की अभिरूचियों का आकलन करना

अनिल सिंह¹, डॉ. भरत कुमार विश्वकर्मा²
¹शोधार्थी शारीरिक शिक्षा, लाइफ लॉग लर्निंग विभाग,
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
²विभागाध्यक्ष, शारीरिक शिक्षा विभाग
श्रीयुत महाविद्यालय, गंगेव, जिला रीवा (म.प्र.)

सारांश –

शारीरिक गतिविधियाँ घर से शुरू की जा सकती हैं, जैसे छात्र-छात्राओं को उनके फेफड़ों को मजबूत करने के लिए साबुन के बुलबुले बनाने और गुब्बारे उड़ाने में शामिल करना। जेबरा लाइनों के बीच कूदना और विभिन्न जानवरों की गतिविधियों की नकल करना भी छात्र-छात्राओं को गतिशील और सक्रिय बनाता है। छात्र-छात्राओं के दैनिक जीवन में खेलों को शामिल करना उनके लिए इसे आसान और अधिक स्वाभाविक बनाता है। कुछ माता-पिता सोच सकते हैं कि उन्हें अपने बच्चों को खेल में रुचि लेने के लिए खेल क्लबों में साइन अप करने की जरूरत है, लेकिन साधारण शारीरिक गतिविधियाँ जैसे कि जंगल में घूमना, पार्को का दौरा करना और लिपट के बजाय सीढ़ियों का उपयोग करना, खेल में उनकी रुचि पैदा कर सकता है। फेंकना, पकड़ना, साइकिल चलाना और दौड़ना जैसी गतिविधियाँ उन्हें शारीरिक रूप से व्यस्त और सक्रिय रखती हैं।



मुख्य शब्द – सतना जिला, ग्रामीण, नगरीय, छात्र-छात्रा एवं खेल में रुचि।

प्रस्तावना –

खेल क्रियाएँ छात्र-छात्राओं को हर्ष उल्लास, क्रोध, भय और दुःख व्यक्त करने का अवसर प्रदान करती हैं। खेल में कुछ भी मनचाहा करने की छूट होती है बशर्ते कि उससे किसी को हानि न पहुँचे। खेल उन भावनाओं और संवेगों को व्यक्त करने का मौका देता है जो अन्य स्थितियों में अभिव्यक्त नहीं किए जा सकते। उदाहरणतः खेल में पिता की भूमिका का अभिनय करते हुए बालिका दूसरे बच्चे को अपनी आज्ञा का पालन करने के लिए कह सकती हैं। ऐसा वह अन्य स्थितियों में शायद न कर सके। लड़ाई का दृश्य खेलते समय वह जोर से चिल्ला सकती है, वस्तुएँ इधर-उधर पटक सकती है जिसकी अनुमति उसे आमतौर पर नहीं मिलती। चार वर्षीय राजा को अकसर अपने माता-पिता से मामूली सा नियम तोड़ने पर भी डाँट पड़ती थी। छोटी-से-छोटी गलती के लिए उसे पिता से थप्पड़ खाना पड़ता था। पिता उसे कमर की पेटी से पीटते थे। यह बच्चा प्रायः कुर्सी पर बैठ कर कल्पना करता कि कुर्सी घोड़ा है और कुर्सी को पेटी से मारते हुए कहता "तेज चलो, और भी तेज"। इससे स्पष्ट है कि बच्चे का मन अपने पिता के प्रति गुस्से और कुढ़न से भरा हुआ

है परंतु इन भावनाओं को वह यथार्थ रूप में अपने पिता के प्रति व्यक्त नहीं कर सकता। यह काल्पनिक खेल-स्थिति उसे अपने गुस्से और भावनाओं को व्यक्त करने का मौका देती है। इस तरह खेल द्वारा अव्यक्त भावनाएँ उभर कर सामने आती हैं। उपर्युक्त उदाहरणों में आपने देखा कि बच्चों के खेल में उनकी भावनाएँ और मनोदशाएँ स्पष्ट रूप से झलकती हैं। इसीलिए खेल उन बच्चों के लिए उपचार या चिकित्सा है जो परिस्थिति के अनुसार सामान्य भावनात्मक प्रतिक्रिया नहीं दर्शाते।

खेल छात्र-छात्राओं के विकास में मदद करके उन्हें भविष्य की भूमिकाओं के लिए तैयार करते हैं। खेल-खेल में सीखी गई संकल्पनाएँ पढ़ने-लिखने के कौशल और समूह खेल में हिस्सा लेने की क्षमता तथा बाद में स्कूल में समायोजन में मदद करते हैं। अतः खेल औपचारिकता शिक्षा की तैयारी में सहायक होता है। खेल प्रश्न पूछने और खोजबीन करने की मनोवृत्ति को भी परिपोषित करता है। जैसे-जैसे बच्चे नई चीजें सीखते हैं और उनमें निपुणता प्राप्त करते हैं वह अपने बारे में आश्वस्त होते हैं। यह बढ़ता हुआ आत्म-विश्वास उन्हें चुनौतियाँ स्वीकार करने के लिए तैयार करता है।

शारीरिक गतिविधियाँ बच्चों के स्वास्थ्य, कल्याण और सीखने का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और मोटर और संज्ञानात्मक कौशल में सुधार के लिए आवश्यक हैं। बच्चे लगातार चढ़ते हैं, कूदते हैं, रेंगते हैं और अपनी सभी शारीरिक क्षमताओं का पता लगाते हैं, लेकिन उनमें अभी भी यह समझ विकसित नहीं हुई है कि अपनी ऊर्जा का उपयोग कैसे करें। इसलिए, यह समझना महत्वपूर्ण है कि उनकी उम्र के लिए कौन सा अनुशासन सही है। खेल उन्हें शारीरिक रूप से मजबूत और सक्रिय रहने में मदद करते हैं। हालाँकि, बच्चों की उम्र बढ़ने के साथ-साथ खेलों में रुचि बनाए रखना एक चुनौती हो सकती है, क्योंकि समय के साथ उनकी खेलों में रुचि कम हो सकती है। मौज-मस्ती की कमी, सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग, स्कूली पाठ्यक्रम की बढ़ती मांग और बढ़ता सामाजिक जीवन कुछ ऐसे कारण हैं जिनकी वजह से बच्चों की रुचि कम हो जाती है या वे खेलों में रुचि नहीं ले पाते हैं। कुछ बच्चे स्वाभाविक रूप से खेलों की ओर आकर्षित होते हैं, लेकिन कुछ ज्यादा रुचि नहीं दिखाते हैं।

विश्लेषण –

सतना जिले के ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों के महाविद्यालयों में अध्ययन की गतिविधियों में संलग्न छात्र-छात्राओं में खेल की अभिरुचियों का आकलन करने के लिए प्राथमिक तौर पर ग्रामीण महाविद्यालयों से 250 एवं नगरीय क्षेत्रों के महाविद्यालयों से 250 छात्र-छात्राओं का चयन कर उनकी कक्षाओं का निर्धारण करने के लिए कि वे स्नातक पाठ्यक्रम अध्ययनरत हैं या फिर स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में। इनसे प्राथमिक स्तर पर मौलिक समकों का संग्रहण किया गया है और उन्हें सरल, सहज, बोधगम्य एवं लोगों को सहजता से समझने योग्य बनाने के लिए इन तथ्यों को वर्गीकृत करने के साथ ही सारणीबद्ध भी किया गया है, जिसे सारणी क्रमांक 1 में प्रस्तुत कर विश्लेषणात्मक अध्ययन का कार्य किया गया है, जो क्रमशः निम्नानुसार है –

सारणी क्रमांक 1

महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की कक्षा का विवरण

क्र.	वर्गीकरण का स्वरूप	ग्रामीण महाविद्यालयों के छात्रों का विवरण		नगरीय महाविद्यालयों के छात्रों का विवरण	
		छात्रों की संख्या	प्रतिशत	छात्रों की संख्या	प्रतिशत
1	स्नातक	152	60.80	163	65.20
2	स्नातकोत्तर	98	39.20	87	34.80
	कुल योग	250	100	250	100

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण

उपर्युक्त सारणी क्रमांक 1 को देखने से सुस्पष्ट होता है कि यह सतना जिला के महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की कक्षा के विवरण से सम्बन्धित है। शोधकर्ता द्वारा जिले के ग्रामीण महाविद्यालयों से 250 छात्र एवं नगरीय महाविद्यालयों से 250 छात्रों का चयन किया गया है। शोधकर्ता द्वारा सतना जिले के ग्रामीण महाविद्यालयों से चयन किये गये कुल 250 छात्रों में 152 छात्रों ने अपना अभिमत दिया कि वे स्नातक किया है,

जिनके प्रतिशत 60.80 है। 98 छात्रों ने बतलाया कि स्नातकोत्तर किया है जिनके प्रतिशत 39.20 है। इसी प्रकार जिले के नगरीय महाविद्यालयों से चयनित कुल 250 छात्रों में 163 छात्रों ने बतलाया कि स्नातक किया है जिनके प्रतिशत 65.20 है तथा 87 छात्रों ने बतलाया कि स्नातकोत्तर किया है, जिनके प्रतिशत 34.80 है।

निष्कर्ष –

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सतना जिले के ग्रामीण एवं नगरीय महाविद्यालयों से चयन किये गये सबसे अधिक छात्रों ने स्वीकार किया है कि वे स्नातक स्तर की शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। जिले के ग्रामीण महाविद्यालयों से चयनित सर्वाधिक 152 एवं नगरीय महाविद्यालयों से चयनित सर्वाधिक 163 छात्र स्नातक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत हैं। जिले के ग्रामीण छात्रों की तुलना में नगरीय छात्रों की संख्या स्नातक पाठ्यक्रम में अत्यधिक है।

संदर्भ –

1. शर्मा, ए. एण्ड कुमार, एस. – शारीरिक शिक्षा विश्व कोश, अर्जुन पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली, संस्करण 2011, पृष्ठ 27
2. शर्मा, ए. एण्ड कुमार, एस. – शारीरिक शिक्षा विश्व कोश, अर्जुन पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली, संस्करण 2011, पृष्ठ 32
3. सिंह, अजमेर – शारीरिक शिक्षा एवं ओलम्पिक अभियान, कल्याण पब्लिकेशन, नई दिल्ली, संस्करण 2004, पृष्ठ 40
4. शर्मा, एन.पी. – शारीरिक शिक्षा के सिद्धान्त एवं इतिहास, शैल साहित्य केन्द्र, नई दिल्ली, संस्करण 2003, पृष्ठ 17